सं । भो । वि । एक डी. / 91-85/35912. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. साकम्भरी इन्जिनियरिंग प्रा० लि०, प्लाट नं ० 70 सैक्टर- ७, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री पान् व वक्कर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में. कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

धीर चूंचि दुरियाणा के राज्यपाल विशाद को न्यायिनिर्णय हेनु निर्दिन्ट करना वोखनीय समझते हैं ;

इसितिये, श्रव, ग्रीसोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई पानितयों छा श्रीम श्रात हुए हरियाणा के राज्य गल इसके द्वारा सर्वारी श्रीधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरों, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की खारा 7 के अधीन गठित श्रम क्यागलय, फरीदाबाद को बिहादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणय एवं पचाट तीन मास में देने हेतुं निर्दिष्ट धरते हैं जो कि उन्नत प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रमा श्रमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है

क्या. त्री भाजून वक्कर की सेवाओं का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

से. भी: वि./एफ.डी./91-85/35919. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल को राय है कि मै॰सांकम्बरी इन्जिनियरिंग प्रा॰ लि॰, ब्लाट नं॰ 70, सैक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री मुंगेर सिंह तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कीई भीशोगिक विवाद है;

्रभोद चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णेग हेनु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझने हैं ;

इसिस्यों, प्रवं, प्रौद्योगिक विवाद प्रशिनियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्सिं प्रमीग नरते हुए हरियाला के राज्यवाल इस हे द्वारा सरकारी प्रधिस्त्रना सं० 5115-3-शम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1868 के , साथ पढ़ते हुए प्रधिस्त्रना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनत प्रधिस्त्रना की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीबाबाद की विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा सामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिष्ट करने हैं. जो कि प्रवन्त्रकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है स्मा विवाद से प्रसंगत प्रथम सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री सुमेर सिंह की सेवाधों का समापन न्योगोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. प्रो. वि./एफ.डी./91-85/35926 - चूंकि हैरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं सांकम्बरी इन्जिनियरिंग प्रा० जिंक, प्रवाद नं 7.6, सैक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री सुदेश शर्मा तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखि त मामके भें कोई श्रीवोगिक विवाद है;

भीक चिंक हरियाणा के राज्यपाल । त्रवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समज्जते हैं ;

इसलिए, श्रव श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिताम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रक्रोग करत हुँदें, हरियोगी के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रीधसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उनते श्रीधमूचना की श्राव्य 7 के श्रीमिण गठित श्रम न्यायालय, 'करीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला स्थायालिय पूर्व पंचाद तीक मास में देने हेतु निर्देश्य करते हैं, जो कि प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसगत ग्रथना सम्बन्धित मामला है:—

्ष्या श्री सुदेश शर्मा की सेवाओं का समापन न्याकोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किसा राहत का इकदार है ?

जै० पी० रतन,

ं क्षप-संचिव, व्हेरियाणाः सरकार, क्षिप्रचार विभागः।